वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 442
ISBN-978-93-84003-51-7

श्री अभिनंदननाथ विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी के
जन्मशताब्दि महोत्सव वर्ष (2014-2015) के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2541, मगसिर शु. षष्ठी	मूल्य
1100 प्रतियाँ	27 नवम्बर 2014	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव विरचित प्रवचनसार ग्रंथानुसार प्राणी के शुभ, अशुभ परिणाम ही उसे तदनुरूप फल की प्राप्ति कराते हैं और जीव के जन्म–जन्मान्तर में संचित पुण्य के फलस्वरूप ही जीव शुभ परिणाम द्वारा जिनधर्म एवं जिनवाणी को सुनने का साधन प्राप्त करता है जिससे उसका समय शुभोपयोग में व्यतीत होता है अन्यथा तो सभी संसारी प्राणी दिन रात अशुभोपयोग में संक्लिष्ट रहकर अपार कष्ट का अनुभव करते हैं।

कहने का अभिप्राय यह है कि अशुभोपयोग से बचने और शुभोपयोग में रत रहने के लिए भक्ति, पूजा, विधान, स्तोत्रपाठ, तीर्थयात्रा आदि अवश्य करना चाहिए। श्री कुंदकुंद स्वामी ने श्रावक के षट् आवश्यक कर्त्तव्यों में दान और पूजा को मुख्य बताया है, जिसमें पूजा के अन्तर्गत नित्य पूजाओं के अतिरिक्त नैमित्तिक पूजाओं में अनेकानेक मण्डल विधानादि की पूजाएँ आ जाती हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, राष्ट्रगौरव, परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य लेखन का अनुपमेय कार्य कर, 400 ग्रंथों की रचना कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है, जिसे युगों–युगों तक विस्मृत नहीं किया जा सकता है। विधान के उसी रचनाक्रम में पूज्य माताजी ने श्रद्धालुजनों के कल्याणार्थ ''श्री अभिनन्दननाथ विधान'' की रचना की है जिसके माध्यम से भक्तगण प्रभुभक्ति का दिव्यस्रोत प्रवाहित कर कर्मनिर्जरा करते हुए महान पुण्य का बंध कर सकते हैं और अपने जीवन में सुख–शान्ति और समृद्धि की प्राप्ति कर सकते हैं।

बन्धुओं ! जीव के महान पुण्योदय से ही उसका द्रव्य पुण्य कार्य में लगकर शुभ आस्रव में कारण बनता है। शाश्वत तीर्थ अयोध्या में पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से श्री कोमलचंद जैन–महमूदाबाद (उ. प्र.) द्वारा तीर्थंकर श्री अभिनन्दननाथ जन्मस्थली टोंक पर जिनमंदिर का निर्माण हुआ है एतदर्थ वह साधुवाद के पात्र हैं। यह विधान श्री कोमलचंद जी, उनके पूरे परिवार के लिए तथा समस्त श्रद्धालु भक्तों के लिए मंगलकारी होवे यही मंगल भावना है। साथ ही विधान की रचनाकर्त्री पूज्य माताजी स्वस्थ एवं दीर्घायु रहकर हम सभी पर इसी प्रकार अपना वरदहस्त बनाए रखें यही वीरप्रभू से मंगल कामना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

तीर्थंकरों की शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या तीर्थ है तथा निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर जी कहलाती है। वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी कालदोषवश चौबीस तीर्थंकरों में से मात्र 5 तीर्थंकर ही शाश्वत तीर्थ अयोध्या में जन्मे, जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं— श्री ऋषभदेव, अजितनाथ, अभिनन्दननाथ, सुमतिनाथ व अनन्तनाथ।

आज से करोड़ों–करोड़ों वर्ष पूर्व इसी अयोध्या तीर्थ में माघ शुक्ला द्वादशी की पवित्र तिथि में महाराजा स्वयंवर की महारानी सिद्धार्था देवी ने भगवान अभिनन्दननाथ को जन्म देकर इस भूलोक को सनाथ किया। एक बार आकाश में मेघ से निर्मित सुन्दर नगर को देख रहे भगवान उसे विनशता देख वैराग्य को प्राप्त हुए और माघ शुक्ला द्वादशी तिथि में ही सिद्धों की साक्षीपूर्वक दीक्षा लेकर घोर तपश्चरण किया। पुनः अष्ट कर्म नष्ट कर उन भगवान अभिनन्दननाथ ने वैशाख शुक्ला षष्ठी तिथि में शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर से निर्वाणधाम को प्राप्त किया।

वर्तमान में पंचमकाल में हमें उन तीर्थंकर भगवन्तों के दर्शन सुलभ नहीं हैं किन्तु उनके पंचकल्याणकों से पवित्र उन तीर्थों की वन्दना कर उसकी चरण रज अपने मस्तक पर लगाकर तथा उन पूज्य तीर्थंकरों की भक्ति, पूजा, विधान, उपासना आदि करके हम अवश्य ही महान पुण्य का सृजन करने में सक्षम हो सकते हैं। एक समय ऐसा था जब हमें इन तीर्थंकरों की भक्ति हेतु विधान करने का माध्यम उचितरूपेण नहीं प्राप्त होता था परन्तु यह बीसवीं–इक्कीसवीं शताब्दी का विशेष पुण्य रहा जब हमें बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के उपवन की सुरभित पुष्परूप, साक्षात् सरस्वती की प्रतिमूर्ति गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैसी महान साध्वी द्वारा रचित आगम के 400 अमूल्य रत्नरूप साहित्य की प्राप्ति हुई जिसने साहित्यजगत में ज्ञानप्राप्ति की दिशा में एक अद्भुत क्रान्ति को प्रादुर्भूत किया। साहित्य निर्माण के क्रम में माताजी द्वारा रचित वृहत् एवं लघु विधानों ने तो सम्पूर्ण जैन जगत में जो भक्ति की गंगा प्रवाहित की जैनजगत उसके लिए उनका चिरऋणी रहेगा।

भक्ति विधानों के नूतन रचनाक्रम में पूज्य माताजी द्वारा रचित ''श्री अभिनन्दननाथ विधान'' भी एक चमत्कारिक कृति है जिसके माध्यम से हम भगवान अभिनन्दननाथ के सम्पूर्ण जीवनवृत्त को समझकर उनकी आराधना द्वारा अपनी कर्मशृंखला को काट सकते हैं। इस विधान में सर्वप्रथम श्री समन्तभद्राचार्य विरचित स्तोत्र है जिसका हिन्दी पद्यानुवाद भी पूज्य माताजी ने किया है। पुनः अर्हंत पूजा और

अभिनन्दननाथ पूजा करके 108 अर्घ्यों द्वारा उनका गुणानुवाद किया गया है, पूजन-विधान के अंत में अत्यन्त सारभूत छोटी एवं बड़ी जयमालाएँ हैं तथा विधान के पश्चात् शाश्वत तीर्थ अयोध्या की पूजा, आरती आदि भी हैं। विशेष ज्ञातव्य है कि पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से ही अयोध्या तीर्थ में अवस्थित पाँचों तीर्थंकरों की पाँचों टोंकों का जीर्णोद्धार कर कमेटी के कर्मठ अध्यक्ष स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी द्वारा वहाँ सुन्दर, भव्य जिनमंदिरों का निर्माण पुण्यार्जक दातारों द्वारा करवाया गया है, उसी श्रृंखला में भगवान श्री अभिनन्दननाथ जिनमंदिर के निर्माण एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा को कराने का सौभाग्य श्री कोमलचंद जैन-महमूदाबाद (उ. प्र.) परिवार को प्राप्त हुआ है और उसी पंचकल्याणक के सुअवसर पर ही इस विधान का प्रकाशन हो रहा है, यह भी प्रसन्नता की बात है।

यह अतिशयकारी विधान सभी भव्यात्माओं के मनोरथों को पूर्ण करे और शाश्वत तीर्थ पर निर्मित ये जिनमंदिर सभी भव्यजीवों को सम्यग्दर्शन की विशुद्धि के साथ उनकी आत्मा को परमात्मस्वरूप प्रदान करने में सफलीभूत होवें यही भगवान अभिनन्दननाथ के श्रीचरणों में मंगल प्रार्थना है। अंत में विधान रचनाकर्त्री एवं तीर्थविकास प्रेरिका पूज्यनीया माताजी के चरणकमलों में कोटि-कोटि वन्दन।

आभार

शाश्वत तीर्थ अयोध्या में हो रही भगवान अभिनन्दननाथ की भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के सुअवसर पर मंदिर निर्माता श्री कोमलचन्द जैन-महमूदाबाद (उ. प्र.) द्वारा इस विधान का प्रकाशन कराया जा रहा है एतदर्थ संस्थान उनका हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता है।

श्री कोमलचन्द जी एक भव्यात्मा जीव हैं जो सदैव देव-शास्त्र-गुरू की भक्ति में तत्पर रहकर अपने द्रव्य का सदुपयोग करते रहते हैं। उनके समान ही उनके पुत्र-पौत्रों में भी यह गुण विद्यमान हैं। वे इसी प्रकार अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग दानादि में करके महान पुण्य का संचय करें और आगे क्रमशः अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने में सफल हों यही मंगल भावना है।

-सम्पादक

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

अयोध्या विकास का स्वर्णिम पृष्ठ

-प्रतिष्ठाचार्य विजय कुमार जैन, जम्बूद्वीप

शाश्वत तीर्थ अयोध्या अपने आप में प्राचीनता को लिए हुए है। आज वर्तमान में भगवान श्रीराम की जन्मभूमि के नाम से विश्व में विख्यात तीर्थ है अयोध्या। जिस तीर्थ का परिचय देने की आवश्यकता सम्पूर्ण विश्व में कहीं पर भी नही है। शाश्वत तीर्थ अयोध्या जो कि भगवान राम की जन्मभूमि से पूर्व भगवान श्री ऋषभदेव की जन्मभूमि है। अपितु भगवान ऋषभदेव सहित 4 तीर्थंकरों की जन्मभूमि है। लेकिन वर्तमान में इस परिचय के साथ इन्हें कोई भी नहीं जानता था। लेकिन सन् 1993 में **जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी** का ऐतिहासिक चातुर्मास तीर्थ अयोध्या पर सम्पन्न हुआ, जिसकी छटा सारे विश्व में बिखरी और उसी के प्रतिफल में अयोध्या तीर्थ का विकास कार्य प्रारंभ हुआ, जो कि दिन दूना रात चौगुना प्रगति को प्राप्त हुआ। क्रम से एक-एक टोंक को विकसित करने का सौभाग्य श्रेष्ठीवर्ग को प्राप्त हुआ, जिसमें भगवान ऋषभदेव की टोंक का विकास टिकैतनगर निवासी लखनऊ प्रवासी श्री कैलाशचंद जैन आदीश कुमार जैन सर्राफ परिवार की ओर से किया गया। उसी क्रम में भगवान अनंतनाथ जन्मस्थान टोंक पर विशाल मंदिर बनाने का सौभाग्य श्री प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटी शाह) अमरचंद जैन-टिकैतनगर को प्राप्त हुआ। उसी क्रम में भगवान श्री अजितनाथ की जन्मस्थान टोंक पर मंदिर बनाने का सौभाग्य टिकैतनगर निवासी लखनऊ प्रवासी श्री वीरेन्द्र कुमार जैन को प्राप्त हुआ। अब इसी क्रम में यह स्वर्णिम अवसर श्रेष्ठी श्री कोमलचंद जैन-महमूदाबाद को का प्राप्त हुआ है, जिसका पंचकल्याणक सम्पन्न हो रहा है।

चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, जो साक्षात् में सरस्वती की प्रतिमूर्ति हैं, जिन्होंने पूजन-विधान के क्षेत्र में समाज को एक नई दिशा प्रदान की है, जिससे सारे देश के अंदर विधानों की श्रृँखला में क्रांति आ गई है। आज सारे विश्व में साल में 365 दिन कहीं न कहीं पर पूज्य माताजी की लेखनी के द्वारा लिखित विधान हो रहे हैं। उसी श्रृँखला में तीर्थंकर श्री अभिनंदननाथ विधान का सृजन भी पूज्य माताजी की लेखनी के द्वारा किया गया है, जो कि सारे देश के लिए एक अनुपम उपहार है। अयोध्या तीर्थ विकास के क्रम में एक स्वर्णिम पृष्ठ है। इस विधान के माध्यम से भगवान अभिनंदननाथ का परिचय एवं उनकी भक्ति का सौभाग्य भक्तों को प्राप्त होगा एवं सबके लिए यह विधान मंगलकारी हो, यही मंगल भावना है।

मण्डल का नक्शा

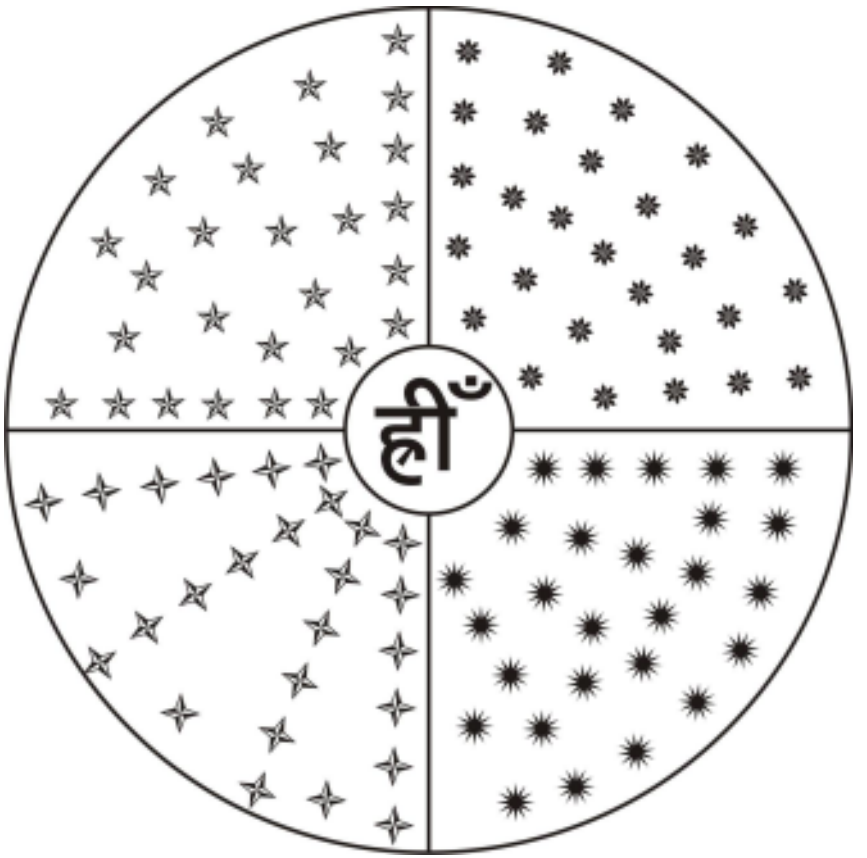

प्रथम कोष्ठक में	– 27 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठक में	– 27 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठक में	– 27 अर्घ्य
चतुर्थ कोष्ठक में	– 27 अर्घ्य
कुल	– 108 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य 2 जयमाला पूर्णार्घ्य

श्री अभिनंदननाथ विधान

मंगलाचरण

गुणैरनंतैरभिनन्दनोऽसौ–वगात् समृद्धिं सहसा त्रिलोक्याम्।
ददाति सौख्यं किल भाक्तिकानां, तं देवदेवं प्रणमामि भक्त्या।।1।।

श्री अभिनन्दनजिनस्तवनम्

(श्री समन्तभद्राचार्य–विरचितम्)

(वंशस्थ छंद)

गुणाभिनन्दा-दभिनन्दनो भवान्, दयावधूं क्षान्ति-सखी-मशिश्रियत्।
समाधितन्त्रस्तदुपोप-पत्तये, द्वयेन नैर्ग्रन्थ्य-गुणेन चायुजत्।।1।।

अचेतने तत्कृत-बन्धजेऽपि च, ममेद-मित्याभिनिवेशक-ग्रहात्।
प्रभंगुरे स्थावर-निश्चयेन च, क्षतं जगत्तत्व-मजिग्रहद् भवान्।।2।।

क्षुदादि-दुःख-प्रतिकारतः स्थिति-र्न चेन्द्रियार्थ-प्रभवाल्पसौख्यतः।
ततो गुणो नास्ति च देह-देहिनो-रितीद-मित्थं भगवान् व्यजिज्ञपत्।।3।।

जनोऽतिलोलोऽप्यनुबन्ध-दोषतो, भया-दकार्येष्विह न प्रवर्त्तते।
इहाप्यमुत्रा-प्यनुबन्ध-दोषवित् कथं सुखे संसजतीति चाब्रवीत्।।4।।

स चानुबन्धोऽस्य जनस्य तापकृत् तृषोऽपि वृद्धिः सुखतो न च स्थितिः।
इति प्रभो लोकहितं यतो मतं, ततो भवानेवगतिः सतां मतः।।5।।

पद्यानुवाद (गणिनी ज्ञानमती)

प्रभु आप गुण की वृद्धि से अभिनन्दनं हुए।
क्षमा सखी सहित दयावधू को आश्रये।।
वरध्यान के आधीन ध्यान सिद्धि के लिए।
अंतर बहि निर्ग्रंथ गुण दोनों से युत हुए।।1।।
पुद्गल व बंधजन्य सुख-दुखादि अन्य में।
ये मेरे हैं इस मिथ्या आशय पिशाच से।।
नश्वर को थिर समझ के नष्ट हुए जगत को।
प्रभु आप सत्य तत्त्व बताया है सभी को।।2।।
क्षुध आदि प्रतीकार हेतु अशन आदि से।
अरु इन्द्रिय विषय से हुए भी अल्प सौख्य से।।
तनु और आत्मा की न स्थिति न उपकार।
प्रभु आपने इस जगत् को समझाया इस प्रकार।।3।।
मानव अती आसक्त भी आसक्तिदोष से।
नृप आदि के भय से अकार्य में न प्रवर्ते।।
द्वय भव में भी आसक्ति दोष जान भव सुख में।
आसक्त कैसे हो रहे विस्मय अहो! इसमें।।4।।
आसक्ति से तृष्णा की वृद्धि जन को तापकर।
संसार सुख न जन को कभी होते तुष्टिकर।।
जिस हेतु आप मत प्रभो! त्रैलोक्य हितंकर।
अत आप ही हैं सत्पुरुष के लिए शरणकर।।5।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

नवदेवता पूजन

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टकं –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा – **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

–दोहा –

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री अभिनंदन जिनपूजा

–अथ स्थापना –

श्री अभिनंदन जिन तीर्थंकर, त्रिभुवन आनंदकारी।
तिष्ठ रहें त्रैलोक्य शिखर पर, रत्नत्रय निधिधारी।।
परमानंद सुधारस स्वादी, मुनिवर तुम को ध्याते।
आह्वानन कर तुम्हें बुलाऊँ, पूजूँ मन हर्षाके।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टकं –

पद्म सरोवर का जल लेकर, कंचन झारी भरिये।
तीर्थंकर पदधारा देकर, जन्म मरण को हरिये।।
अभिनंदन जिन चरणकमल को, पूजूँ मन वच तन से।
परमानंद सुखास्पद पाऊँ, छूटूँ भव भव दुःख से।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन काश्मीरी, केशर संग घिसायो।
जिनवर चरण सरोरुह चर्चत, अतिशय पुण्य कमाओ।।अभि.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम तंदुल उज्ज्वल ले, धोकर थाल भराऊँ।
जिनवर आगे पुंज चढ़ाकर, अक्षय सुख को पाऊँ।।अभि.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा हरसिंगार चमेली, माला गूँथ बनाई।
तीर्थंकर पद कमल चढ़ाकर, काम व्यथा विनशाई।।अभि.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी गुझिया पूरण पोली, बरफी और समोसे।
प्रभु के सन्मुख अर्पण करते, क्षुधा डाकिनी नाशे।।
अभिनंदन जिन चरणकमल को, पूजूँ मन वच तन से।
परमानंद सुखास्पद पाऊँ, छूटूँ भव भव दुःख से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप की ज्योती जगमग, करती तिमिर विनाशे।
प्रभु तुम सन्मुख आरति करते, ज्ञानज्योति परकाशे।।अभि.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी धूपघटों में, खेवत उठे सुगंधी।
पापपुंज जलते इक क्षण में, फैले सुयश सुगंधी।।अभि.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेब अनार आम सीताफल, ताजे सरस फलों से।
पूजूँ चरण कमल जिनवर के, मिले मोक्ष फल सुख से।।अभि.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल अर्घ्य सजाकर उसमें, चाँदी पुष्प मिलाऊँ।
'ज्ञानमती' कैवल्य हेतु मैं, प्रभु को अर्घ्य चढ़ाऊँ।।अभि.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

नाथ पाद पंकेज, जल से त्रय धारा करूँ।
अतिशय शांती हेत, शांतीधारा विश्व में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
मिले आत्म सुख लाभ, जिनपद पंकज पूजते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद –

पुरी अयोध्या में सिद्धार्था, माता के आँगन में।
रत्न बरसते पिता स्वयंवर, बाँट रहे जन जन में।।
मास श्रेष्ठ वैशाख शुक्ल की, षष्ठी गर्भकल्याणक।
इन्द्र महोत्सव करते मिलकर, जजें गर्भकल्याणक।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां श्रीअभिनंदननाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐरावत हाथी पर चढ़कर, इन्द्र शची सह आए।
जिनबालक को गोदी में ले, सुरगिरि पर ले जायें।।
माघ शुक्ल द्वादश तिथि उत्तम, जन्म महोत्सव करते।
जिनवर जन्मकल्याणक पूजत, हम भवदधि से तरते।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां श्रीअभिनंदननाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमामीति स्वाहा।

सुंदर नगर मेघ का विनशा, देख प्रभू वैरागी।
लौकांतिक सुर स्तुति करते, प्रभु गुण में अनुरागी।।
हस्तचित्र पालकि में प्रभु को, बिठा अग्रवन पहुँचे।
माघ शुक्ल बारस दीक्षा ली, बेला कर प्रभु तिष्ठे।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां श्रीअभिनंदननाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल चौदश तिथि जिनवर, असनवृक्ष तल तिष्ठे।
बेला करके शुक्ल ध्यान में, घातिकर्म रिपु दग्धे।।
केवलज्ञान ज्योति जगते ही, समवसरण की रचना।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजत ही मैं, झट पाऊँ सुख अपना।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्दश्यां श्रीअभिनंदननाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमामीति स्वाहा।

प्रभु सम्मेदशिखर पर पहुँचे, योग निरोध किया जब।
तिथि वैशाख शुक्ल षष्ठी के, निज शिवधाम लिया तब।।
इन्द्र सभी मिल मोक्षकल्याणक, पूजा किया रुची से।
अभिनंदन जिन मोक्षकल्याणक, जजूँ यहाँ भक्ती से।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां श्रीअभिनंदननाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

अभिनंदन जिन पदकमल, निजानंद दातार।
पूर्ण अर्घ्य अर्पण करत, मिले भवोदधि पार।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ 108 अर्घ्य

–दोहा –

दुष्ट कर्म अरि नाश के, निज स्वतंत्र पद प्राप्त।
पुष्पांजलि कर पूजते, होवें निजगुण प्राप्त।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–स्रग्विणी छंद –

नित्य आनंद के हो स्वभावी तुम्हीं।
सौख्य शाश्वत मिले आपकी भक्ति से।।
वर्ण गंधादि से शून्य शुद्धात्मा।
मैं जजूँ आपको आश पूरो प्रभो!।।1।।

ॐ ह्रीं नित्यानंदस्वभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! आनंदधर्मा चिदानंद हो।
पूर्ण आनंदधन सौख्य देवो मुझे।।

वर्ण गंधादि से शून्य शुद्धातमा।
मैं जजूँ आपको आश पूरो प्रभो!।।2।।

ॐ ह्रीं आनंदधर्माय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम आनंद धर्मा गुणांभोधि हो।
स्वात्मआनंद पाऊँ प्रभो भक्ति से।।
कल्पतरु आपसे याचना मैं करूं।
दीजिये तीन ही रत्न पूजूँ तुम्हें।।3।।

ॐ ह्रीं परमानंदधर्माय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

राग आदि से हीन, साम्यस्वभावी देव हो।
जजूँ भक्ति में लीन, अभिनंदन जिनराज को।।4।।

ॐ ह्रीं साम्यस्वभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्यस्वरूप महान्, समतादिक गुण के निलय।
नमूँ नमूँ गुणखान, साम्यरूप होवे प्रगट।।5।।

ॐ ह्रीं साम्यस्वरूपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत की राशि, परमशुद्ध परमातमा।
नमत मिले सुख राशि, दोष अनंत समाप्त हो।।6।।

ॐ ह्रीं अनंतगुणाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत अभिराम, आप रूप हो परिणमे।
शत शत करूँ प्रणाम, मिले नंतगुण संपदा।।7।।

ॐ ह्रीं अनंतगुणस्वरूपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अनंत धरंत, अनेकांत के नाथ हो।
तुम पद भक्ति करंत, समकित निधि अनुपम मिले।।8।।

ॐ ह्रीं अनंतधर्माय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अनंत समेत, आप स्वरूप महान् है।
जजूँ स्वात्म पद हेतु, निजस्वरूप विकसित करो।।9।।

ॐ ह्रीं अनंतधर्मस्वरूपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष से दूर, शम स्वभाव भगवान् हो।
ज्ञान सुधारस पूर, भर दीजे भक्ती करूँ।।10।।
ॐ ह्रीं शमस्वभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शम से तुष्ट महान्, सब विभाव से दूर हो।
जजत बनूँ धनवान्, स्वात्म सौख्य भंडार हो।।11।।
ॐ ह्रीं शमतुष्टाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं धन से संतोष, उपशम से ही शांति हो।
मिले स्वात्म संतोष, जजत कषायों को हनूँ।।12।।
ॐ ह्रीं शमसंतोषाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्यभाव स्थान, परमानंद प्रदानकृत्।
सप्तपरम स्थान, अभिनंदन जजते मिले।।13।।
ॐ ह्रीं साम्यस्थानाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समभावों से श्रेष्ठ, अगणित गुणमणि प्राप्त हो।
अभिनंदन जग ज्येष्ठ, जजूं मुझे सुख साम्य दो।।14।।
ॐ ह्रीं साम्यगुणाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता से कृतकृत्य, सिद्धिरमा के पति हुये।
पूजन से सत्कृत्य, वीतरागता को भजूँ।।15।।
ॐ ह्रीं साम्यकृतकृत्याय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तिनगर को छोड़, अन्य शरण नहिं आपको।
नमूँ नमूँ कर जोड़, शरण लिया मैं आपकी।।16।।
ॐ ह्रीं अनन्यशरणाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रादिक में नाहिं, ऐसे गुण बस आपमें।
नमूँ आप पद माहिं, निजगुण संपति दो मुझे।।17।।
ॐ ह्रीं अनन्यगुणाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्य जनों में नाहिं, ऐसा ज्ञान महान् है।
जजूँ चरण युग माहिं, अभिनंदन जिनराज के।18।।
ॐ ह्रीं अनन्यप्रमाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना भेद प्रमाण, है प्रत्यक्ष परोक्ष से।
इनसे रहित महान्, अभिनंदन प्रभु को जजूं।।19।।
ॐ ह्रीं प्रमाणमुक्ताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो ब्रह्मस्वरूप, परमब्रह्म परमातमा।
मिले स्वात्मचिद्रूप, अभिनंदन प्रभु को जजूं।।20।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मज्ञान गुणमान्य, चिच्चैतन्य स्वरूप हो।
मिले परम शुद्धात्म, नमूँ आपको भक्ति से।।21।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मज्ञान चैतन्य, चिन्मय चिंतामणि प्रभो।
मिटे जगत वैषम्य, नमते इच्छित फल मिले।।22।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मचैतन्याय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन भगवान्, भाव पारिणामिक धरें।
स्वात्म सुधारस पान, करूँ आपकी भक्ति से।।23।।
ॐ ह्रीं शुद्धपारिणामिकभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वभाव धरंत, भाव कर्ममल से रहित।
अभिनंदन भगवंत, पूजत मन पावन करो।।24।।
ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्त रौद्र दुर्ध्यान, भाव अशुद्धी से रहित।
देवो धर्म महान्, चित्त शुद्ध होवे प्रभो!।।25।।
ॐ ह्रीं अशुद्धिरहिताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मयमूर्ति अपूर्व, शुद्धि अशुद्धि से रहित।
नमते ज्ञान अपूर्व, मिले पूर्ण शुद्धी सहित।।26।।
ॐ ह्रीं शुद्ध्यशुद्धिरहिताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन हुआ अनंत, शाश्वत सर्व विलोकते।
नमूँ जजूं भगवंत, गुण अनंत के हो धनी।।27।।
ॐ ह्रीं अनंतदृशे श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मय ज्योति धरंत, दर्श अनंतस्वरूप हो।
मेरे भव का अंत, होवे अभिनंदन जजूँ।।28।।
ॐ ह्रीं अनंतदृक्स्वरूपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत दर्शानंद, गुण स्वभाव धारो तुम्हीं।
नमूँ नमूँ सुखकंद, गुण अनंत पूरो प्रभो!।।29।।
ॐ ह्रीं अनंतदृगानंदस्वभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत क्षायिक दर्श, उत्पादक तुम ही प्रभो।
क्षयोपशम गुण नष्ट, किया आप गुण को जजूँ।।30।।
ॐ ह्रीं अनंतदृगुत्पादकाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्रुव अनंत भगवंत, द्रव्य नयाश्रित आप हो।
नहिं हो मेरा अंत, इसी हेतु पूजा करूँ।।31।।
ॐ ह्रीं अनंतध्रुवाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशरहित भगवंत, अनंत अव्यय भाव हो।
सौख्य अनंतानंत, आप भक्ति से प्राप्त हो।।32।।
ॐ ह्रीं अनंताव्ययभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपद कहा अनंत, वही महल है आपका।
नमूँ मुक्तिश्री कंत, शुक्लध्यान दीजे मुझे।।33।।
ॐ ह्रीं अनंतनिलयाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनंत प्रमाण, सिद्धशिला पर राजते।
करो मेरा कल्याण, मृत्युजयी तुम पद जजूँ।।34।।
ॐ ह्रीं अनंतकालाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव अनंत प्रमाण, नित्य आपमें शोभते।
त्रिभुवन वंद्य महान्, नमूँ स्वात्मगुण हेतु मैं।।35।।
ॐ ह्रीं अनंतभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मय ज्ञान स्वरूप, चिच्चैतन्य महान् हो।
गुणमणि स्वात्मस्वरूप, मिले आपकी भक्ति से।।36।।
ॐ ह्रीं चिन्मयस्वरूपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित् चिंतामणि रूप, प्रभु चिद्रूप स्वरूप हो।
नमूँ सदा गुण रूप, चिंतित फलदाता तुम्हीं।।37।।
ॐ ह्रीं चिद्रूपस्वरूपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिच्चैतन्य स्वरूप, धर्म एक अनुपम कहा।
परमशुद्ध चिद्रूप, नमूँ आप गुण हेतु मैं।।38।।
ॐ ह्रीं चिद्रूपधर्माय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

निज आत्मा की उपलब्धि किया, संतत प्रभु रहते उसमें ही।
मैं निज से निज में रम जाऊँ, इसलिये नमूँ तुमको नित ही।।
अभिनन्दनप्रभु की पूजा से, 'सोहं' यह भाव प्रगट होता।
फिर पुनर्भवों से छूटें जन, निज आत्मा का अनुभव होता।।39।।
ॐ ह्रीं स्वात्मोपलब्धिरतये श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मा का अनुभव करके, संपूर्ण कर्म को जला दिया।
निश्चय सम्यक्त्व मिले मुझको, इस हेतू प्रभु अर्चना किया।।अभि.।।40।।
ॐ ह्रीं स्वानुभूतिरताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमामृत मोक्षधाम जग में, उसमें रत आप सिद्धिपति हैं।
यह नाम मंत्र है परम, रसायन सर्व व्याधिहर औषधि है।।अभि.।।41।।
ॐ ह्रीं परमामृतरताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमामृत में संतुष्ट हुये, वे सिद्ध गुणों से पुष्ट रहें।
इस अमृत की इक बिंदु मुझे, मिल जावे जिससे तुष्टि लहें।।अभि.।।42।।
ॐ ह्रीं परमामृततुष्टाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज में ही प्रीति परम तुष्टी, इससे परिपुष्ट बलिष्ठ बनें।
परमात्मा में प्रीती प्रतिक्षण, स्थायि रहे तब सौख्य घने।।अभि.।।43।।
ॐ ह्रीं परमप्रीतये श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तीकन्या के बल्लभ हो, अति श्रेष्ठ भुवनबल्लभ तुम ही।
इस भव में परभव में भी, बस मेरे साथ रहो तुम ही।।अभि.।।44।।
ॐ ह्रीं परमबल्लभभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं प्रगट स्वभाव तुम्हारा है, बस योगी ही ध्या सकते हैं।
मेरे मन सरसिज में तिष्ठो, बस यही याचना करते हैं।।
अभिनन्दनप्रभु की पूजा से, 'सोहं' यह भाव प्रगट होता।
फिर पुनर्भवों से छूटें जन, निज आत्मा का अनुभव होता।।45।।
ॐ ह्रीं अव्यक्तस्वभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकत्व स्वरूप तुम्हारा है, अणुमात्र न पर अपना होता।
एकत्व भावना मिल जावे, पूजा का लाभ यही होगा।।अभि.।।46।।
ॐ ह्रीं एकत्वस्वरूपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकत्व नाम का गुण अनुपम, इससे ही आप जगद्गुरु हैं।
मैं एक अकेला त्रिभुवन में, बस आप ही एक मेरे प्रभु हैं।।अभि.।।47।।
ॐ ह्रीं एकत्वगुणाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकत्व भावना को भाकर, मुनिराज स्वात्मसुख पाते हैं।
फिर चित्स्वभाव में तन्मय हो, त्रिभुवन के गुरु बन जाते हैं।।अभि.।।48।।
ॐ ह्रीं एकत्वभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नय प्रमाणादि का द्वित्व जहाँ, नहिं रहता है बस एकात्मा।
निर्विकल्प ध्यान ऐसा उत्तम, जिससे प्रगटित हो परमात्मा।।अभि.।।49।।
ॐ ह्रीं द्वित्वविनाशनाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय से आत्मा शाश्वत है, नहिं जन्म मरण होता उसको।
निज शुद्ध ध्यान से प्रगट किया, नित नमूँ सदा उन जिनवर को।।अभि.।।50।।
ॐ ह्रीं शाश्वताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत प्रकाश को फैलाया, तीनों जग में अद्भुत रवि हो।
मेरा मन कमल विकास करो, सब मोह अंधेरा विघटित हो।।अभि.।।51।।
ॐ ह्रीं शाश्वतप्रकाशाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत उद्योत किया भगवन्, नहिं गमन कदाचित् करते हो।
मेरे मन में उद्योत करो, अज्ञान तुम्हीं हर सकते हो।।अभि.।।52।।
ॐ ह्रीं शाश्वतउद्योताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत धर्मामृत बरसाते, प्रभु आप एक अद्भुत शशि हो।
शुद्धात्म पियूष मुझे भी दो, जिससे मुझ आत्मा सुखमय हो।।
अभिनंदन प्रभु की पूजा से 'सोहं' यह भाव प्रगट होता।
फिर पुनर्भवों से छूटें जन, निज आत्मा का अनुभव होता।।53।।
ॐ ह्रीं शाश्वतामृतचंद्राय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत अमृत की मूर्ति तुम्हीं, नहिं मरण आपका हो सकता।
निज आत्म सुधारस मिल जावे, जिससे मुझ मरण विनश सकता।।अभि.।।54।।
ॐ ह्रीं शाश्वतअमृतमूर्तये श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब नाम कर्म को नष्ट किया, इससे प्रभु परमसूक्ष्म मानें।
मैं ध्यान धरूँ सूक्ष्मात्मा का, मेरे सब दुष्ट कर्म हानें।।अभि.।।55।।
ॐ ह्रीं परमसूक्ष्माय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सूक्ष्म गुणान्वित सब सिद्धों, को अवगाहन देने वाले।
इक सिद्ध में सिद्ध अनंतानंत, रहें सुअनंत गुणों वाले।।अभि.।।56।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मावकाशाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में सूक्ष्म अनंत गुणों, को युगपत् जान रहे हैं जो।
उन सूक्ष्म गुणान्वित जिनवर को, वंदन करते ही शिवसुख हो।।अभि.।।57।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो परमरूप में लीन रहे, वे निजस्वरूप में गुप्ति धरें।
निज से निज को निज में पाकर, अतिशायि स्वस्थ शिवधाम वरें।।अभि.।।58।।
ॐ ह्रीं परमस्वरूपगुप्तये श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मर्यादारहित पूर्ण सुख का, जो संतत अनुभव करते हैं।
ऐसे जिनवर को हृदय कमल, में मुनिगण धारण करते हैं।।अभि.।।59।।
ॐ ह्रीं निरवधिसुखाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मर्यादा विरहित गुणमणि से, जो निज को भूषित कर शोभें।
उनके गुण का जो कथन करें, वे स्वयं स्वात्म गुण से शोभें।।अभि.।।60।।
ॐ ह्रीं निरवधिगुणाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधी विरहित निज के स्वरूप, में सुस्थित हुये अनंतावधि।
इन सिद्धों की स्तुति करते, मिल जावे निजस्वरूप निरवधि।।
अभिनन्दनप्रभु की पूजा से, 'सोहं' यह भाव प्रगट होता।
फिर पुनर्भवों से छूटें जन, निज आत्मा का अनुभव होता।।61।।
ॐ ह्रीं निरवधिस्वरूपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुलना से रहित ज्ञान पाकर, त्रिभुवन को युगपत् जान लिया।
तुलना से रहित सुयश पाकर, त्रिभुवन में कीर्ति बिखेर दिया।।अभि.।।62।।
ॐ ह्रीं अतुलज्ञानाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपमा से रहित सौख्य पाकर, जो काल अनंतों तक सुखमय।
जिनके पदकमल सतत मुनिगण, अपने मन से ध्याते गुणमय।।अभि.।।63।।
ॐ ह्रीं अतुलसुखाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुलना से रहित भाव धरकर, लोकाग्र भाग पर राज रहे।
इनको निज मन में ध्या करके, मुनिगण निजशुद्ध स्वभाव लहें।।अभि.।।64।।
ॐ ह्रीं अतुलभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुलना से रहित अतुल गुण को, पाकर जो संतत तृप्त रहें।
उनके गुण का यश गाते ही, भविजन नितप्रति संतुष्ट रहें।।अभि.।।65।।
ॐ ह्रीं अतुलगुणाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अतुल प्रकाश धरें निज का , आत्मा की ज्योती अद्भुत है।
उन जिनवर को चित में धरते, अज्ञान अंधेरा विघटित है।।अभि.।।66।।
ॐ ह्रीं अतुलप्रकाशाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सखी छंद–

सुर आदि डिगाने आवें, फिर भी जो अचल रहावें।
जो ऐसा ध्यान लगावें, वे सिद्ध बनें मुनि ध्यावें।।67।।
ॐ ह्रीं अचलाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनने निश्चल गुण पाये, वे स्वात्मसुखास्पद पाये।
जो उनको नितप्रति पूजें, उनके सब पातक धूजें।।68।।
ॐ ह्रीं अचलगुणाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अचलस्वभाव धरें हैं, शिवकन्या वे हि वरे हैं।
जो उनकी भक्ति करेंगे, वे निज की तृप्ति करेंगे।।69।।
ॐ ह्रीं अचलस्वभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अचलस्वरूप धरंता, वे सिद्धिवधू के कंता।
उनको हम वंदन करते, संपूर्ण उपद्रव टलते।।70।।
ॐ ह्रीं अचलस्वरूपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में ख्यात हुये हैं, अवलंबन रहित हुये हैं।
अभिनंदन प्रभु का अर्चन, कर देता पाप निकंदन।।71।।
ॐ ह्रीं निरालंबाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर के अवलंबन विरहित, सब परिग्रह संग विवर्जित।
अभिनंदन प्रभु की भक्ती, इससे शिवपथ की युक्ती।।72।।
ॐ ह्रीं आलंबरहिताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सब कर्म लेप से हीना, गुणमणि युत निज में लीना।
अभिनंदन प्रभु की अर्चा, जिससे निज की हो चर्चा।।।73।।
ॐ ह्रीं निर्लेपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्म कलंक विहीना, प्रभु निष्कलंक गुण लीना।
इन तीर्थंकर को वंदूं, यमराज दुःख को खंडूं।।74।।
ॐ ह्रीं निष्कलंकाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज में ही अतिशय प्रीती, परद्रव्यों में अप्रीती।
इन तीर्थंकर को पूजूँ, संपूर्ण दुःखों से छूटूँ।।75।।
ॐ ह्रीं आत्मरतये श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु निज स्वरूप में गुप्ती, इससे ही पायी मुक्ती।
मैं तीर्थंकर को ध्याऊँ, निज में समरससुख पाऊँ।।76।।
ॐ ह्रीं स्वरूपगुप्तये श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शुद्ध द्रव्य के स्वामी, त्रिभुवन के अंतर्यामी।
आठों कर्मों से विरहित, जिनवर को पूजूँ नितप्रति।।77।।
ॐ ह्रीं शुद्धद्रव्याय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों परिवर्तन शून्या, संसार भ्रमण दुख शून्या।
ऐसे जिनवर का वंदन, मिट जावे भवभय क्रन्दन।।78।।
ॐ ह्रीं असंसाराय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आनंदामृत प्रीती, परभाव विरागी नीती।
तीर्थंकर शरण में आयो, परमानंदामृत पायो।।79।।
ॐ ह्रीं स्वानंदरतये श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज का आनंद महाना, जिन भाव स्वरूप निधाना।
अभिनंदन चरण की श्रद्धा, करती धन धान्य समृद्धा।।80।।
ॐ ह्रीं स्वानंदभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंदस्वरूप हमेशा, भव दुःख रहित परमेशा।
मैं आप शरण में आके, निज सुख पायो हर्षाके।।81।।
ॐ ह्रीं स्वानंदस्वरूपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परमानंद गुणान्वित, संपूर्ण विभाव विवर्जित।
ऐसे प्रभुवर की भक्ती, प्रगटावे आतम शक्ती।।82।।
ॐ ह्रीं स्वानंदगुणाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आनंदामृत तुष्टी, निज गुण से ही परिपुष्टी।
ऐसे प्रभुवर की अर्चा, मेटे भव भव दुख चर्चा।।83।।
ॐ ह्रीं स्वानंदसंतोषाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब ही विभाव पर्यायें, हो गई शुद्ध मन भायें।
अभिनंदन प्रभु को वंदूँ, निज को गुणमणि से मंडूं।।84।।
ॐ ह्रीं शुद्धभावपर्यायाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पराधीनता विरहित, प्रभु पूर्ण स्वतंत्र गुणों युत।
मैं जजूँ भक्ति से प्रभु को, पाऊँ स्वतंत्रता गुण जो।।85।।
ॐ ह्रीं स्वतंत्रधर्माय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म स्वभाव अनूपा, परमाल्हादक गुणरूपा।
ऐसे जिनवर को वंदूं, कर्मारिशत्रु को खंडूं।।86।।
ॐ ह्रीं आत्मस्वभावाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित् भाव चिदानंद दाता, निज शुद्धों की है माता।
ऐसे जिनवर का अर्चन, संपूर्ण दुखों का मर्दन।।87।।
ॐ ह्रीं परमचित्परिणामाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिद्रूप ज्ञानगुणधारी, चैतन्यस्वरूप विहारी।
मैं नमूँ आप गुण गाऊँ, परमानंदामृत पाऊँ।।88।।
ॐ ह्रीं चिद्रूपस्वरूपाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिद्रूप चिदानंद स्वामी, त्रिभुवन के अंतर्यामी।
मैं जजूँ परम श्रद्धा से, तृप्ती हो ज्ञान सुधा से।।89।।
ॐ ह्रीं चिद्रूपगुणाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्नातक परम तुम्हीं हो, कैवल्यज्ञान संयुत हो।
मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ाके, निज सुख पाऊँ गुण गाके।।90।।
ॐ ह्रीं परमस्नातकाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुद्ध धर्म के धारी, स्नात कहें नर नारी।
मैं वंदन करूँ रुची से, पा जाऊँ धर्म तुम्हीं से।।91।।
ॐ ह्रीं स्नातधर्माय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण भुवन अवलोका, निज स्वात्म स्वरूप विलोका।
मैं नमूँ शीश को नाऊं, परमानंदामृत पाऊँ।।92।।
ॐ ह्रीं सर्वविलोकनाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य शिखर पर तिष्ठे, परिवर्तन पाँच मिटाके।
मैं जजूँ युगल कर जोड़े, नानाविधि संपत दौड़े।।93।।
ॐ ह्रीं लोकाग्रस्थिताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु लोक अलोक सुव्यापी, निज ज्ञान किरण से व्यापी।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ, निज ज्ञान सूर्य प्रगटाऊँ।।94।।
ॐ ह्रीं लोकालोकव्यापकाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद–

कर्म आठों सभी जीव को दुःख दें।
मुक्ति साम्राज्य को छीन लीना प्रभो।।
स्वात्म सिद्धी मिले ज्ञानज्योती जगे।
आप को पूजते सर्व व्याधी टले।।95।।

ॐ ह्रीं कर्माष्टकरहिताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक सौ आठ चालीस प्रकृती कही।
आपने नाशके मोक्षलक्ष्मी लिया।।
कर्म से शून्य परमात्मसुख के लिये।
मैं जजूँ आपको लब्धियां नौ मिलें।।96।।

ॐ ह्रीं शताष्टचत्वारिंशत्कर्मप्रकृतिमुक्ताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के भेद संख्यात हों आठ के।
नाश के आपने सिद्धिकांता वरी।।
स्वात्मसिद्धी मिले ज्ञानज्योती जगे।
आपको पूजते सर्व व्याधी टले।।97।।

ॐ ह्रीं संख्यातकर्मछेदकाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के ही असंख्यात भी भेद हों।
नित्य संसार में ये रुलाते रहें।।
आपने नाश के सिद्धिकन्या वरी।
मैं नमूँ आपको स्वात्मसंपद मिले।।98।।

ॐ ह्रीं असंख्यातकर्मरहिताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के भेद ये जो अनंते कहे।
सौख्य मेरा अनंता इन्होंने हरा।।
आपने नाश के सिद्धिकांता वरी।
मैं नमूँ आपको स्वात्मसंपद मिले।।99।।

ॐ ह्रीं अनंतकर्मविमुक्ताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म नाशे अनंते अनंते सभी।
आप ही ज्ञान आनन्त्य सिंधू कहे।।
मैं अनंतों गुणों को स्वयं ही वरूँ।
शक्ति ऐसी मिले आपकी भक्ति से।।100।।

ॐ ह्रीं अनन्तानन्तकर्मरहिताय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–श्री छंद –

हे 'सुकृती' तुम पुण्य धरन्ता।
पुण्य करें जन भक्ति करन्ता।।
श्री अभिनंदन जिन को पूजूं।
सर्व अमंगल दुःख से छूटूं।।101।।

ॐ ह्रीं सुकृतिने श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धातु' तुम्हीं सब शब्द जनंता।
चिन्मय धातु तनू भगवंता।।अभि.।।102।।

ॐ ह्रीं धातवे श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम्हीं 'इज्यार्ह' कहाये।
इन्द्र मुनीगण पूज्य सु गायें।।अभि.।।103।।

ॐ ह्रीं इज्यार्हाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'सुनय' सहपेक्ष नयों से।
सत्य सुधर्म कहा अति नीके।।अभि.।।104।।

ॐ ह्रीं सुनयाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीसुनिवास' तुम्हीं प्रभु माने।
सम्पति धाम तुम्हें मुनि जानें।।अभि.।।105।।

ॐ ह्रीं श्रीनिवासाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम्हीं 'चतुरानन' ब्रह्मा।
दीख रहे मुख चार सभा मा।।अभि.।।106।।

ॐ ह्रीं चतुराननाय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुर्वक्त्र' तुमको सुर पेखें।
नाथ! समोसृति में तुम देखें।।
श्री अभिनंदन जिन को पूजूं।
सर्व अमंगल दुःख से छूटूं।।107।।

ॐ ह्रीं चतुर्वक्त्राय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'चतुरास्य' तुम्हें भवि वंदें।
जन्म जरा मृति तीनहिं खंडें।।अभि.।।108।।

ॐ ह्रीं चतुरास्याय श्रीअभिनंदननाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–(पूर्णार्घ्य)–

जो सर्व सिद्ध अनादि अनिधन गुण सुगंधि बिखेरते।
अनुपम अखंडित ज्ञान रवि से साधु मन तम भेदते।।
मन वचन तनु से शुद्ध हो, मैं करूँ प्रभु की अर्चना।
जल गंध आदिक अर्घ्य अर्पूं, करूँ यम की भर्त्सना।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीअभिनंदननाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथाय नमः।

(9, 27 या 108 सुंगधित पुष्प या लवंग या पीले तंदुल से जाप्य करना)

जयमाला

–दोहा –

गणपति नरपति सुरपती, खगपति रुचि मन धार।
अभिनंदन प्रभु आपके, गाते गुण अविकार।।1।।

–शेर छंद –

जय जय जिनेन्द्र आपने जब जन्म था लिया।
इन्द्रों के भी आसन कंपे आश्चर्य हो गया।।

सुरपति स्वयं आसन से उतर सात पग चले।
मस्तक झुका के नाथ चरण वंदना करें।।2।।

प्रभु आपका जन्माभिषेक इन्द्र ने किया।
सुरगण असंख्य भक्ति से आनंदरस लिया।।
तब इन्द्र ने ''अभिनंदन'' यह नाम रख दिया।
त्रिभुवन में भी आनंद ही आनंद छा गया।।3।।

प्रभु गर्भ में भी तीन ज्ञान थे तुम्हारे ही।
दीक्षा लिया तत्क्षण ही मनःपर्यज्ञान भी।।
छद्मस्थ में अठरा बरस ही मौन से रहे।
हो केवली फिर सर्व को उपदेश दे रहे।।4।।

गणधर प्रभू थे वज्रनाभि समवसरण में।
सब इक सौ तीन गणधर सब ऋद्धियाँ उनमें।।
थे तीन लाख मुनिवर ये सात भेदयुत।
ये तीन रत्नधारी, निर्ग्रंथ वेषयुत।।5।।

गणिनी श्री मेरुषेणा आर्या शिरोमणी।
त्रय लाख तीस सहस छह सौ आर्यिका भणी।।
थे तीन लाख श्रावक, पण लक्ष श्राविका।
चतुसंघ ने था पा लिया, भवसिंधु की नौका।।6।।

सब देव देवियाँ असंख्य थे वहाँ तभी।
तिर्यंच भी संख्यात थे सम्यक्त्व युक्त भी।।
सबने जिनेन्द्र वच पियूष पान किया था।
संसार जलधि तिरने को सीख लिया था।।7।।

इक्ष्वाकुवंश भास्कर कपि चिन्ह को धरें।
प्रभु तीन सौ पचास धनुष तुंग तनु धरें।।

पचास लाख पूर्व वर्ष आयु आपकी।
कांचनद्युती जिनराज थे सुंदर अपूर्व ही।।8।।

तन भी पवित्र आपका सुद्रव्य कहाया।
शुभ ही सभी परमाणुओं से प्रकृति बनाया।।
तुम देह के आकार वर्ण गंध आदि की।
पूजा करें वे धन्य मनुज जन्म धरें भी।।9।।

प्रभु देह रहित आप, निराकार कहाये।
वर्णादि रहित नाथ! ज्ञानदेह धराये।।
परिपूर्ण शुद्ध बुद्ध, सिद्ध परम आत्मा।
हो 'ज्ञानमती' शुद्ध, बनूँ शुद्ध आतमा।।10।।

–दोहा –

पुण्य राशि औ पुण्य फल, तीर्थंकर भगवान्।
स्वातम पावन हेतु मैं, नमूँ नमूँ सुखदान।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य अभिनंदन विधान, सदा करें बहु भक्ति से।
वे नित्य ही आनंद मंगल, पाएंगे शुभ भाग्य से।।
इस लोक के सुख भोग कर, फिर गुण अनंतों पाएंगे।
स्वयमेव केवल 'ज्ञानमति' हो, मुक्तिसुख पा जाएंगे।।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

सोरठा

अभिनंदन जिनदेव, अखिल अमंगल को हरें।
नित्य करूँ मैं सेव, मेरे कर्मांजन हरें।।1।।

सखी छंद

जय जय जिन देव हमारे, जय जय भविजन बहु तारें।
जय मुक्तिरमापति देवा, शत इंद्र करें तुम सेवा।।2।।

मुनिवृंद तुम्हें चित धारें, भविवृंद सुयश विस्तारें।
सुर नर किन्नर गुण गावें, किन्नरियाँ बीन बजावें।।3।।

भक्तीवश नृत्य करे हैं, गुण गाकर पाप हरे हैं।
विद्याधर गण बहु आवें, दर्शन कर पुण्य कमावें।।4।।

भव भव के त्रास मिटावें, यम का अस्तित्त्व हटावें।
जो जिनगुण में मन पागें, तिन देख मोह रिपु भागें।।5।।

जो प्रभु की पूज रचावें, इस जग में पूजा पावें।
जो प्रभु का ध्यान धरे हैं, उनका सब ध्यान करे हैं।।6।।

जो करते भक्ति तुम्हारी, वे भव भव में सुखियारी।
इस हेतु प्रभो तुम पासे, मन के उद्गार निकासे।।7।।

जब तक मुझ मुक्ति न होवे, तब तक सम्यक्त्व न खोवे।
तब तक जिनगुण उच्चारूँ, तब तक मैं संयम धारूँ।।8।।

तब तक हो श्रेष्ठ समाधी, नाशे जन्मादिक व्याधी।
तब तक रत्नत्रय पाऊँ, तब तक निज ध्यान लगाऊँ।।9।।

तब तक तुम ही मुझ स्वामी, भव भव में हो निष्कामी।
ये भाव हमारे पूरो, मुझ मोह शत्रु को चूरो।।10।।

घत्ता

जय जय चिन्मूरति, गुणमति पूरित, जय जिनवर वृष चक्रपती।
जय 'ज्ञानमती' धर, शिवलक्ष्मीवर, भविजन पावें सिद्धगती।।11।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथाय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य अभिनंदन विधान, सदा करें बहु भक्ति से।
वे नित्य ही आनंद मंगल, पायेंगे शुभ भाग्य से।।
इस लोक के सुख भोग कर, फिर गुण अनंतों पाएंगे।
स्वयमेव केवल 'ज्ञानमति' हो, मुक्तिसुख पा जाएंगे।।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–दोहा –

तीर्थंकर चक्री मदन, त्रयपद धारी ईश।
शांतिनाथ भगवान को, नमूँ-नमूँ नत शीश।।1।।

कुंथुनाथ-अरनाथ प्रभु, तीन-तीन पद नाथ।
इनके श्री चरणाब्ज को, नमूँ नमाकर माथ।।2।।

वर्तमान में वीरप्रभु, शासनपति भगवान।
इनके शासन में हुये, बहु आचार्य महान।।3।।

मूलसंघ में कुंदकुंद गुरु, अन्वय सरस्वतिगच्छ।
बलात्कारगण में हुए , सूरि नमूँ मन स्वच्छ।।4।।

सदी बीसवीं के प्रथम, गुरु दिगंबराचार्य।
चरितचक्रवर्ती श्री, शांतिसागराचार्य।।5।।

इनके शिष्योत्तम श्री, वीरसागराचार्य।
पहले पट्टाचार्य गुरु, नमूँ भक्ति उर धार्य।।6।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, चालिस जगत्प्रसिद्ध।
पौष शुक्ल चौदस तिथी, हस्तिनागपुर तीर्थ।।7।।

मैंने गणिनी ज्ञानमती, किया विधान प्रपूर्ण।
अभिनंदन भगवान का, भरे सौख्य संपूर्ण।।8।।

जब तक जम्बूद्वीप की, कीर्ति जगत् में व्याप्त।
तब तक ''ज्ञानमती'' कृती, रहे विश्वविख्यात।।9।।

(इति श्रीअभिनंदननाथविधानं संपूर्णं।)

वर्द्धतां जिनशासनं।

श्री अयोध्या तीर्थपूजा

-अथ स्थापना-

(तर्ज-गोमटेश, जय गोमटेश.....)

आदिनाथ, जय आदिनाथ, मम हृदय विराजो-2
हम यही भावना करते हैं।
भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।
हो नगर नगर में प्रभु पूजा, सारी धरती भक्तिस्थल हो।।हम0।।1।।
युग की आदी में इन्द्रराज ने, नगरि अयोध्या रचवाई।
श्री नाभिराय मरुदेवि को पाकर, सारी जनता हरषाई।।
प्रभु आदिनाथ का जन्म याद कर, मेरा मन भी उज्ज्वल हो।।हम0।।2।।
श्री अजितनाथ अभिनंदन सुमती, जिन अनंत ने जन्म लिया।
इन्द्रों ने जिनशिशु को लेकर, मेरू गिरि पर अभिषेक किया।।
जिन जन्मभूमि का अर्चन कर, मेरा मन भी अति उज्ज्वल हो।।हम0।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अष्टक-

तर्ज-आवो बच्चों तुम्हें दिखायें.....

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

सरयूनदि का जल अति शीतल, पद्मपराग सुवास मिला।
रागभाव मल धोवन कारण, धार करें मनकंज खिला।।
जलधारा से पूजा करते, पावें उज्ज्वल कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।1।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।
केशर घिस कर्पूर मिलाया, भ्रमर पंक्तियां आन पड़ें।
तीर्थक्षेत्र पूजन से नशते, कर्मशत्रु भी बड़े बड़े।।
चंदन से पूजा करते ही, पावें अविचल कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।2।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।
चंद्र चन्द्रिका सम सित तंदुल, पुंज चढ़ाएं भक्ती से।
अमृतकण सम निज समकित गुण, पायें अतिशय युक्ती से।।
अक्षत से जिनक्षेत्र पूजते, पावें अक्षय कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।3।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

वर्ण वर्ण के सुमन सुगंधित, पारिजात वकुलादि खिले।
काम व्यथा नश जाय क्षेत्र को, अर्पण कर नवलब्धि[1] मिले।।
पुष्पों से पूजा करते ही, पावें निजगुण कीर्ति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।4।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

रसगुल्ला रसपूर्ण अंदरसा, कलाकंद पयसार[2] लिये।
अमृतपिंड सदृश नेवज से, तीर्थक्षेत्र को यजन किये।।
चरु से पूजा करते ही जन, हरते क्षुध की भीति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।5।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

1. क्षायिक ज्ञान आदि नव लब्धियाँ। 2. मलाई।

हेमपात्र में घृत भर बत्ती, ज्योति जले तम नाश करे।
दीपक से आरति करते ही, हृदयपटल की भ्रांति हरे।।
करें आरती भक्ति भाव से, पावें आतमज्योति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।6।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

धूपघड़े में धूप जलाकर, अष्टकर्म को दग्ध करें।
निज आतम के भावकर्म मल, द्रव्यकर्म भी भस्म करें।।
धूप खेयकर पूजा करते, पावें सुरभित कीर्ति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।7।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतम तीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

फल अंगूर अनंनासादिक, सरस मधुर ले थाल भरे।
आत्म अतीन्द्रिय सुख के इच्छुक, फल अर्पें बहु भक्ति भरे।।
फल से पूजा करते ही हम, पावें निजपद तीर्थ को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।8।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।
जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल अर्घ्य लिया।
केवल 'ज्ञानमती' पद हेतू, जिनपद पंकज अर्घ्य किया।।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पावें शिवपद तीर्थ को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।9।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-सोरठा-

सरयूनदि का नीर, कंचन झारी में भरा।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा शं करे।।10।।
शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल कल्हार, पुष्पांजलि करते यहाँ।
मिले सौख्य भंडार, यश सौरभ चहुंदिश भ्रमे।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

पांच टोंक के पांच अर्घ्य

नरेन्द्र छंद

आदिनाथ के गर्भागम के, छह महिने पहले ही।
इन्द्राज्ञा से धनपति ने आ, रत्नों की वर्षा की।।
चैत्र वदी नवमी[1] जिन जन्में, किया महोत्सव सुरगण।
ऋषभदेव जन्मस्थल पूजत, मिले आत्मनिधि तत्क्षण।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवगर्भजन्मकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. आदिनाथ के आषाढ़ कृ. 2 गर्भ, चैत्र कृ. 9 जन्म, चैत्र कृ. 9 तप, फाल्गुन कृ. 11 ज्ञान, माघ कृ. 14 मोक्ष।

अजितनाथ ने जन्म लिया जब, सुरपति आसन कंपे।
जितशत्रू पितु माता विजया, पुलकित मन आनंदे।।
माघ सुदी दशमी तिथि[1] उत्तम न्हवन हुआ मेरू पर।
अजितनाथ जन्मस्थल पूजत, मिले आत्मनिधि तत्क्षण।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथगर्भजन्मतपकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन जननी सिद्धार्था माता[2], इन्द्रों से भी पूजित।
श्री ह्री धृति कीर्ती बुद्धी, लक्ष्मी देवी से सेवित।।
पिता स्वयंवर भी हर्षित हो, रत्नों को नित बांटें।
हम भी अभिनंदन जिनवर को, पूजत संकट काटें।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथगर्भजन्मतपकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि द्वितिया गर्भागम, सुमंगला माँ हर्षित।
चैत्र सुदी ग्यारस प्रभु जन्में, पिता मेघरथ पुलकित।।
सुदि नवमी वैशाख सुदीक्षा, चैत्र सुदी ग्यारस में।
केवलज्ञान मोक्षकल्याणक सुमतिनाथ को प्रणमें।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथगर्भजन्मतपकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरी विनीता में अनंतप्रभु, सिंहसेन घर जन्मे।
जयश्यामा माता आनंदित, ज्येष्ठ वदी बारस[3] में।।
जन्मदिवस दीक्षा प्रभु चैत्र अमावस केवलज्ञानी।
इस ही तिथि में मोक्षकल्याणक जजत बनें निजज्ञानी।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथगर्भजन्मतपकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। **शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं अनंतानंततीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यापुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।**

1. ज्ये. कृ. अमावस्या गर्भ, माघ शु. 10 जन्म, माघ शु. 9 तप, पौ. शु. 11 केवलज्ञान, चैत्र शु. 5 मोक्षकल्याणक। 2. अभिनंदनाथ का बैशाख शु. 6 गर्भ, माघ शु. 12 जन्म, और तप, पौष शु. 14 ज्ञान और बैशाख शु. 6 मोक्ष। 3. अनन्तनाथ का कार्तिक कृ. 1 गर्भकल्याणक।

जयमाला

-शंभु छन्द-

हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।
भक्ती से प्रभु के चरणों में, गुणमाल चढ़ाने आये हैं।।टेक.।।

है धन्य अयोध्यापुरी जहाँ, श्री आदिनाथ ने जन्म लिया।
जिन अजितनाथ अभिनंदन सुमती, प्रभु अनंत ने धन्य किया।।
कैलाशगिरी से वृषभदेव जिन, मोक्षधाम को पाए हैं।।हे0।।1।।

सम्राट् भरतचक्री ने दीक्षा ले, शिवपद को प्राप्त किया।
इक्ष्वाकुवंशि[1] नृप चौदह लाख हि, लगातार शिवधाम लिया।।
ये पुरी विनीता के जन्में, परमात्मधाम को पाए हैं।।हे0।।2।।

बाहुबलि कामदेव ने जीत, भरत को फिर दीक्षा धरके।
प्रभु एक वर्ष थे ध्यान लीन, तन बेल चढ़ी अहि भी लिपटे।।
फिर केवलज्ञानी बनें नाथ, हम गुण गाके हर्षाए हैं।।हे0।।3।।

श्री अजितनाथ आदिक चारों, तीर्थंकर सम्मेदाचल से।
शिवधाम गये इन्द्रादिवंद्य, हम नित वंदें, मन वच तन से।।
धनि धन्य अयोध्या जन्मस्थल, शिवथल वंदत हर्षाए हैं।।हे0।।4।।

चक्रीश सगर आदिक यहाँ के, कर्मारि नाश शिव लिया अहो।
श्री रामचन्द्र ने इसी अयोध्या, को पावन कर दिया अहो।।
मांगीतुंगी से मोक्ष गये, इन वंदत पुण्य बढ़ाए हैं।।हे0।।5।।

युग की आदी में आदिनाथ, पुत्री ब्राह्मी सुंदरी हुईं।
पितु से ब्राह्मी औ अंकलिपी, पाकर विद्या में धुरी हुईं।।
पितु से दीक्षा ले गणिनी थीं, इनके गुण सुर नर गाए हैं।।हे0।।6।।

इनके पथ पर अगणित नारी, ने चलकर स्त्रीलिंग छेदा।
आर्यिका सुलोचना ने ग्यारह, अंगों को पढ़ जग संबोधा।।
दशरथ माँ पृथिवीमती आर्यिका, को हम शीश नमाए हैं।।हे0।।7।।

1. अयोध्या में भरत को आदि लेकर चौदह लाख इक्ष्वाकुवंशीय राजा बिना व्यवधान के लगातार मोक्ष गये हैं। (हरिवंश पु. सर्ग 13 श्लोक 13।)

सीता ने अग्निपरीक्षा में, सरवर जल कमल खिलाया था।
पृथ्वीमति गणिनी से दीक्षित, आर्यिका बनीं यश पाया था।।
श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण लवकुश, सब दुःखी हृदय गुण गाए हैं।।हे0।।8।।

सीता ने बासठ वर्षों तक, बहु उग्र उग्र तप तप करके।
तेंतिस दिन सल्लेखना ग्रहण, करके सुसमाधि मरण करके।।
अच्युत दिव में होकर प्रतीन्द्र, रावण को बोध कराए हैं।।हे0।।9।।

जय जय रत्नों की खान रत्नगर्भा, रत्नों की प्रसवित्री।
जय जय साकेतापुरी अयोध्यापुरी विनीता सुखदात्री।।
जय जयतु अनादिनिधन नगरी, हम वंदन कर हर्षाए हैं।।हे0।।10।।

बस कालदोष से इस युग में, यहाँ पांच तीर्थंकर जन्म लिए।
सब भूत भविष्यत् कालों में, चौबिस जिन जन्मभूमि हैं ये।।
हम इसका शत शत वंदन कर, अतिशायी पुण्य कमाए हैं।।हे0।।11।।

जय जय तीर्थंकर भरत सगर, जय रामचन्द्र लव कुश गुणमणि।
जय जयतु आर्यिका ब्राह्मी माँ, सुंदरी व सीता साध्वीमणि।।
हम केवल 'ज्ञानमती' हेतू, तुम चरणों शीश झुकाए हैं।।हे 0।।12।।

जय जयतु अयोध्या जिस निकटे, है टिकैतनगर जहाँ जन्म लिया।
जय जयतु आर्यिका रत्नमती, जिनने निज जीवन धन्य किया।।
ब्राह्मी माँ की पदधूलि बनूं, यह भाव हृदय लहराए हैं।
हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाए हैं।।हे0।।13।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-दोहा-

वीर संवत् पच्चीस सौ, उन्निस मगसिर शुद्ध।
ग्यारस तिथि पूजा रची, जिन यजते हो सिद्धि।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

भगवान श्री अभिनंदननाथ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मैं तो भूल चली.....

अभिनंदन प्रभू जी की आज, हम सब आरति करें।
बड़ा सांचा प्रभू का दरबार, सब मिल आरति करें।।टेक.।।

राजा स्वयंवर के घर जब थे जन्में,
इन्द्रगण मेरू पे अभिषेक करते,
नगरी अयोध्या में खुशियां अपार, सब मिल आरति करें,
अभिनंदन प्रभू जी की .....।।1।।

माघ सुदी बारस की तिथि बनी न्यारी,
प्रभुवर ने उग्र वन में दीक्षा थी धारी,
त्रैलोक्यपूज्य प्रभुवर की आज, सब मिल आरति करें,
अभिनंदन.....।।2।।

पौष सुदी चौदस में केवल रवि प्रगटा,
प्रभु की दिव्यध्वनि सुनकर जग सारा हर्षा,
केवलज्ञानी प्रभुवर की आज, सब मिल आरति करें,
अभिनंदन.....।।3।।

शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदगिरि है,
वहीं पे प्रभू ने मुक्तिकन्या वरी है,
मुक्तिरमापति प्रभू की आज, सब मिल आरति करें,
अभिनंदन.....।।4।।

प्रभु तेरे द्वारे हम आरति को आए,
आरति के द्वारा भव आरत मिटाएं,
''चंदनामति'' मिले शिवमार्ग, सब मिल आरति करें,
अभिनंदन.....।।5।।

अयोध्या तीर्थ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–चांद मेरे आ जा रे .....

आरती तीर्थ अयोध्या की-2
तीर्थंकरों की, जन्मभूमि यह, सब मिल करो आरतिया।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।टेक.।।

शाश्वत यह पुरी अयोध्या, जग में जानी जाती है।
सम्मेदशिखर के सदृश, पावन मानी जाती है।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।1।।

यूं तो इस भू पर सारे, तीर्थंकर सदा जनमते।
लेकिन इस युग में जन्में, तीर्थंकर पंच परम थे।।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।2।।

श्री ऋषभ अजित अभिनंदन, सुमती अनंत जी जन्मे।
उन्नीस शेष तीर्थंकर, सब अलग-अलग ही जन्मे।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।3।।

तीरथ की पावन रज को, मस्तक पर धारण कर लो।
इसकी आरति कर अपने, कष्टों का निवारण कर लो।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।4।।

आदीश्वर की खड्गासन, प्रतिमा को नमन करें हम।
''चंदनामती'' इस शाश्वत, तीरथ को नमन करें हम।।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।5।।

भजन

(गर्भकल्याणक गीत)

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–सपने में.....

प्रभु गर्भकल्याण में बरसे रतन की धारा रे।
कहे धनकुबेर भी, धन्य है भाग्य हमारा रे।।टेक.।।

इक पुण्यशालिनी माँ जब, देखे सोलह सपने तब।
तीर्थंकर सुत को पाती, निज जन्म धन्य कर पाती।।
उस समय पिता का, खुल जाता भण्डारा रे।
कहे धनकुबेर भी, धन्य है भाग्य हमारा रे।। प्रभु...।।1।।

त्रय ज्ञान सहित तीर्थंकर, आते हैं माँ के गरभ जब।
माँ की महिमा बढ़ जाती, वे प्रश्न सहज सुलझातीं।।
अज्ञान तिमिर हर देतीं ज्ञान उजारा रे।
कहे धनकुबेर भी, धन्य है भाग्य हमारा रे।। प्रभु...।।2।।

प्रभु गर्भकल्याण मनाएं, हम भी ऐसा फल पाएं।
अब ऐसी माँ से जन्में, जो देखे सोलह सपने।।
''चंदनामती'' यह उत्सव कितना प्यारा रे।
कहे धनकुबेर भी, धन्य है भाग्य हमारा रे।। प्रभु...।।3।।

भजन

(जन्मकल्याणक गीत)

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मंदिर में बाज रहे घंटे.....

स्वर्गों में बाज उठे बाजे, इन्द्रों ने मुकुट झुकाए हैं।
जिनवर का जनम हुआ भू पर, धनपति ने रतन लुटाए हैं।। टेक.।।

देवों का परिकर लेकर, इन्द्र-इन्द्राणी आए हैं-2 ।
देखा जो शिशु तीर्थंकर, नेत्र हजार बनाये हैं।
सुन्दरता लखकर प्रभुवर की, फिर भी तृप्ती ना पाये हैं।। जिनवर.....।।1।।

स्वर्गों के वस्त्राभूषण, इन्द्राणी ने पहनाए हैं।
रत्नों के पलने में फिर, जिनवर को सभी झुलाए हैं।।
प्रभु के संग खेलने को, सबके मन ललचाए हैं।। जिनवर.....।।2।।

माता का प्रभु दूध न पीते, फिर भी तो बलशाली हैं।
स्वर्गों से भोजन आता है, महिमा यही निराली है।।
'चंदनामती' उन प्रभुवर के, मात-पिता हर्षाये हैं।। जिनवर.....।।3।।

भजन

(भगवान की दीक्षा के समय का गीत)

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-चल दिया छोड़.....

सब अथिर जान संसार, तजा घर बार, अवध के स्वामी।
फिर नहीं किसी की मानी।।टेक.।।

पहले तो ब्याह रचाया था, सबको सब कुछ सिखलाया था।
राजाओं ने भी राजनीति तब जानी-
फिर नहीं किसी की मानी।।1।।

इक दिन था उल्कापात हुआ, प्रभु का मन पूर्ण विरक्त हुआ।
दे पुत्र को अपना राज्य बने वे ज्ञानी-
फिर नहीं किसी की मानी।।2।।

प्रभु नगरि अयोध्या छोड़ चले, पहुँचे दीक्षा हेतू वन में।
हुई केशलोंच से उनकी शुरू कहानी-
फिर नहीं किसी की मानी।।3।।

जिस वृक्ष तले ध्यानस्थ हुए, केवलज्ञानी भी वहीं हुए।
''चन्दनामती'' यह तीर्थंकर की निशानी, फिर नहीं किसी की मानी।।
फिर नहीं किसी की मानी।।4।।

भजन

(केवलज्ञान गीत)

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-तुम तो ठहरे परदेशी.....

समवसरण दर्शन करो, तो भव्य कहलाओगे।
यदि तुम अभव्य हुए, तो दर्श नहीं पाओगे।।टेक.।।

प्रभु जी की धर्म सभा, में जो भी आता है।
तुम भी दिव्यध्वनि को सुनो, तो भव से तिर जाओगे।।
समवसरण.....।।1।।

गूंगे भी वहाँ जाकर, बोलने लग जाते हैं।
तुम भी आज श्रद्धा करो, तो आत्मसुख पाओगे।।
समवसरण.....।।2।।

बड़े-बड़े मानियों का भी, मान गलित होता है वहाँ।
देखो वही मानस्तंभ, मुक्तिपथ पाओगे।।
समवसरण.....।।3।।

दर्शनों के भावों से, मेढक ने देवगति ली।
दर्शन करो तुम भी तो, देवगती पाओगे।।
समवसरण.....।।4।।

भव्य या अभव्यपने की, ''चन्दना'' परीक्षा करो।
दर्शन से भव्यत्व की, श्रेणी में आओगे।।
समवसरण.....।।5।।

भजन

(निर्वाणकल्याणक गीत)

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-माई रे माई.....

प्रभु अभिनन्दन निर्वाणोत्सव, मिलकर सभी मनाएँ।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।। टेक.।।

वर्ष करोड़ों पूर्व तिथि वैशाख शुक्ल षष्ठी थी।
गिरि सम्मेद से मोक्ष पधारे, अभिनंदन जिनवर जी।।
तब स्वर्गों से इन्द्रों ने आ, दीप असंख्य जलाए।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।1।।

ऋषभदेव से महावीर तक, हैं चौबिस तीर्थंकर।
इन सबका उपदेश एक ही, धर्म अहिंसा हितकर।।
जिओ और जीने दो सबको, यह संदेश सुनाएँ।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।2।।

सिद्धक्षेत्र की भक्ती करके, हम भी सिद्ध बनेंगे।
जब तक सिद्ध नहीं बनते, तब तक प्रभु भक्ति करेंगे।।
सभी 'चन्दनामती' खुशी से, यही भावना भाएँ।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।1।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-सपने में .....

जिनवर का महामस्तकाभिषेक निराला है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।टेक.।।

जब जल की धारा पड़ती, चन्दा के किरण सम लगती।
शीतल हो जाती धरती, पावन होते नरतन भी।।
हैं पुण्यवान वे जो करते जलधारा है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।1।।

जब दूध से न्वहन करें हम, क्षीरोदधि स्मरण करें हम।
ऊपर से नीचे बहती, तब दुग्धमयी हो धरती।।
प्रभु तन पर कर लो तुम भी दूध की धारा है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।2।।

जब दही की धारा पड़ती, मोती की लड़ियाँ लगती।
सर्वौषधि कलश ढुराएं, हम तन को स्वस्थ बनाएँ।।
केशर से प्रभु का रंग केशरिया प्यारा है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।3।।

करो शांतिधारा प्रभु पर, हो जावे शांति धरा पर।
"चंदनामती" जिन भक्ति, सबके भवकल्मष हरती।।
कलियुग में प्रभु भक्ती ही एक सहारा है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।4।।

भजन

तर्ज–दिल्ली का कुतुबमीनार देखो....

देखो देखो देखो, जन्मभूमि देखो,
जन्मस्थली का विकास देखो, अयोध्यापुरी का प्रकाश देखो।
सारे जगत में इस तीर्थ का, फैला है नाम तुम आज देखो।।
हो देखो देखो, अयोध्या देखो-2 ।।टेक.।।

कहते हैं जिनशासन का, पहला शाश्वत तीर्थ यही।
तीर्थंकर भगवन्तों के, जन्म सदा होते हैं यहीं।।
उनकी ही महिमा का सार देखो, तीरथ अयोध्या विकास देखो।
सारे जगत में इस तीर्थ का, फैला है नाम तुम आज देखो।।
हो देखो देखो, अयोध्या देखो.।।1।।

वर्तमान चौबीसी के, पाँच तीर्थंकर जन्मे हैं।
उनके पाँचों टोंक यही, पुण्य कथानक कहते हैं।।
उन सबका हो गया विकास देखो, जिनवर के गुण का प्रकाश देखो।
सारे जगत में इस तीर्थ का, फैला है नाम तुम आज देखो।।
हो देखो देखो, अयोध्या देखो.।।2।।

ज्ञानमती माताजी की, मिली प्रेरणा है सबको।
शाश्वत तीर्थ अयोध्या का, खूब प्रचार करो भक्तों।।
''चन्दनामती'' यह प्रयास देखो, जिनमत का होगा प्रकाश देखो।
सारे जगत में इस तीर्थ का, फैला है नाम तुम आज देखो।।
हो देखो देखो, अयोध्या देखो.।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-मैंने तेरे ही भरोसे पारसनाथ.....

शाश्वत तीरथ है अयोध्यापुरी धाम, चलो जी चलें यात्रा को।
तीर्थंकर जन्मभूमि है महान, चलो जी चलें यात्रा को।।शाश्वत.।।टेक.।।

काल अनादी से तीर्थंकर, सभी जनम लेते हैं यहाँ।
उनका जन्मकल्याण मनाने, इन्द्र सभी आते हैं यहाँ।।
गूंजे वहाँ उनका पावन गुणगान, चलो जी चलें यात्रा को।।शाश्वत.।।1।।

उसी अयोध्या में इस युग के, पाँच तीर्थंकर जन्मे हैं।
ऋषभ अजित अभिनंदन सुमती, प्रभु अनंत जी जन्मे हैं।।
उनके बने हैं जनमस्थान, चलो जी चलें यात्रा को।।शाश्वत.।।2।।

जनमभूमि टोकों का क्रम से, जीर्णोद्धार विकास हुआ।
श्री अभिनन्दननाथ टोंक पर जिनमंदिर निर्माण हुआ।।
उसी मंदिर का है पंचकल्याण, चलो जी चलें यात्रा को।।शाश्वत.।।3।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमति माता, की प्रेरणा का प्रतिफल है।
श्री रवीन्द्रकीर्ती स्वामी की, कर्मठता व परिश्रम है।।
तभी ''चन्दनामती'' है धूमधाम, चलो जी चलें यात्रा को।।शाश्वत.।।4।।

पुण्यशालि कोमलचंद जी, महमूदाबाद के श्रावक हैं।
पुत्र-पुत्रवधुएँ भी उनके, मंदिर के पुण्यार्जक हैं।।
युग युग रहेगा भक्ती में इनका नाम, चलो जी चलें यात्रा को।।शाश्वत.।।5।।